राज्य अध्याय 7

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **यहोशू 1, 6 और न्यायियों 2, 7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से ***पढ़ें****)* कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (यहोशू 1, 6 , न्यायियों 2 और 7) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(परमेश्वर का राज्य)* **(4) लूका 9:62**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 1:16। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टान्त)* **गेहूँ के बीच जँगली पौधे**

मत्ती 13:24-30, 36-43 में "गेहूँ के बीच जँगली पौधे" का दृष्टांत निम्न के विषय बताता है

परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोग

"दृष्टांत" एक स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य-जीवन की कहानी या चित्रण होता है जो एक आध्यात्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया जाता है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीकरण की आवश्यकता के साथसामना करने के लिए सामान्य स्थान और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया।

हम दृष्टांतों के अध्ययन के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टांत का अध्ययन करेंगे (देखें नियम-पुस्तक 9, पूरक 1)।

पढ़ें मत्ती 13:24-30, 36-43।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय दें। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

बीज बोनेवाला एक खेत पर बीज बोता हुआ। संसार में प्रत्येक जगह, लोग समझते हैं कि बाद में एक फसल काटने के विचार के साथ खेत पर बीज कैसे बोया जाता है। वास्तव में किसी को भी अपेक्षा नहीं होती है कि गेहूँ के बीच जँगली पौधों के बीज बोने तक एक शत्रु इतना कपटी हो सकता है! यही कारण है कि नौकरों को

यह जानकर आश्चर्य होता है कि गेहूँ के बीच बहुत सारे जँगली पौधे उग रहे थे!

जँगली पौधे। वनस्पतिशास्त्री हमें बताते हैं कि इस प्रकार के जँगली पौधों को तकनीकी शब्दावली द्वारा "लोलियम टेमुलेंटम" कहा जाता है। यह एक अप्रिय जँगली पौधा है, जो विकास के अपने प्रारंभिक चरण में गेहूँ के समान दिखता है। विकास के प्रारंभिक चरण के दौरान, दोनों जँगली पौधे और गेहूँ अभी फलक में ही होते हैं और वे एक दूसरे के इतने समान दिखते हैं कि उनके बीच अंतर करना कठिन होता है। क्योंकि मजदूर इसके बीच अंतर नहीं कर सकते हैं कि गेहूँ और जँगली पौधे कौनसे हैं, मालिक उन्हें आज्ञा देता है कि वे न जाएँ और जँगली पौधे न उखेड़ें, ताकि ऐसा न हो कि वे जँगली पौधों के साथ गेहूँ भी उखेड़ दें। जँगली पौधे इसके अलावा एक फफूंद को पोषक देते हैं जो आदमी और जानवर दोनों के लिए विषैला है। इसलिए, शत्रु का कार्य एक अवमान्यत अपराध है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जाँच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय दें। दृष्टान्त की "कहानी" के संदर्भ में "अस्त" और दृष्टान्त का "स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग" हो सकता है। दृष्टान्त का अस्त दृष्टान्त को बताने के अवसर को बता सकता है, या दृष्टान्त को बताने के समय परिस्थितियों का वर्णन कर सकता है। अस्त आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के पश्चात पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त का अस्त, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का अस्त मत्ती अध्याय 13 में निहित है।

यीशु मत्ती अध्याय 13 में आठ दृष्टान्तों को सिखाता हैः बीज बोनेवाले का दृष्टांत, गेहूँ के बीच जँगली पौधे, राई का दाना, खमीर, छिपा खजाना, बड़े मूल्य का मोती, बड़ा जाल और गृहस्थ। सभी आठ दृष्टांत परमेश्वर के राज्य से संबंधित हैं और प्रत्येक दृष्टांत परमेश्वर के राज्य के दूसरे पहलू पर जोर देता है।

इसके अलावा, बीज बोनेवाले और गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत के बीच एक घनिष्ठ संबंध है। उन्हें संभवतः एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध में भीड़ को बताया गया था और बाद में यीशु द्वारा केवल उसके शिष्यों को समझाया गया था।

(2) दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:24-30 में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग मत्ती 13:36-43 में निहित है।

बिंदु 3 देखें: दृष्टांत के प्रासंगिक विवरण। बिंदु 6 देखें: दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं का सारांश।

"मनुष्य का पुत्र" शब्दों की व्याख्या। पृथ्वी पर यीशु के समय के दौरान, "मनुष्य का पुत्र" शब्द यहूदियों के बीच मसीहा के लिए वर्तमान पदनाम नहीं था। ये शब्द दानिय्येल 7:13-14 में उत्पन्न हुए, जो कहता है, "और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था।" उसने पिता परमेश्वर से पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए अधिकार, महिमा और प्रभु सत्ता प्राप्त की। उस भविष्यद्वाणी के दर्शन में, सभी लोगों, राष्ट्रों और हर भाषा के लोगों को उसकी आराधना करनी थी। उसका राज्य अनंतकाल का राज्य होगा जो कभी नहीं टलेगा और जो कभी नष्ट नहीं होगा, जैसे पृथ्वी पर अन्य राज्यों के साथ होता है। यीशु ने स्वयं को नामित करने हेतु मसीहा के लिए पुराने नियम के इन शब्दों को अपनाया। "मनुष्य का पुत्र" शब्दों का प्रयोग नए नियम में हमेशा यीशु मसीह के लिए किया जाता है और यह उसके अपमान की स्थिति और उसके उत्थान की स्थिति दोनों को इंगित करता है।

यीशु का अपमान। नया नियम बताता है कि "मनुष्य के पुत्र" का पृथ्वी पर कोई स्थायी निवास नहीं था (मत्ती 8:20)। वह कड़वी पीड़ा के अधीन होने वाला था (मत्ती 17:12)। उसे धोखा दिया जाएगा, मौत के घाट उतार दिया जाएगा और दफन किया जाएगा (मत्ती 26:24; 12:40)। परन्तु उसके अपमान के दौरान भी, मनुष्य का पुत्र निश्चित रूप से केवल एक साधारण आदमी नहीं था। वह सब्त का *प्रभु* था (मत्ती 12:8)। उसके पास पापों को क्षमा करने का *अधिकार* था (मत्ती 9:6)। वह एक *निश्चित उद्देश्य* के साथ इस दुनिया में आया, अर्थात् कई लोगों के बदले फिरौती के रूप में अपने जीवन को देने के लिए (मत्ती 20:28) और वह खोए हुए को ढूँढने और बचाने के लिए आया (लूका 19:10)।

यीशु का उत्थान। नया नियम सिखाता है कि "मनुष्य का पुत्र" मृतकों से फिर से जी उठेगा (मत्ती 17:9)। उसके मानव स्वभाव में, महिमा और कई स्वर्गदूतों के साथ, वह पृथ्वी को छोड़ देगा और स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाएगा (प्रेरितों के काम 1:9-11; मत्ती 16:27)। वह सभी लोगों के न्यायधीश के रूप में अपनी महिमा के

सिंहासन पर बैठेगा (मत्ती 25:31)।

इस प्रकार, "मनुष्य का पुत्र" एक ही समय में "दुखों का पुरुष" (यशायाह 53:3) और "महिमा का प्रभु" (1 कुरिन्थियों 2:8) है। यहूदियों से बातचीत में इस उपाधि का उपयोग करके, यीशु धीरे-धीरे स्वयं को प्रकट करने में सक्षम था, एकदम से पूरा नहीं। यदि उसने स्वयं को "मसीहा" कहा होता, तो उसकी सेवकाई अचानक रुक सकती थी। इसीलिए लोग धीरे-धीरे पूछने लगे, "यह मनुष्य का पुत्र कौन है?" (यूहन्ना 12:34)। इन शब्दों को अपने स्व-पदनाम के रूप में उपयोग करके, यीशु ने जोर देकर बताया कि वह राष्ट्रवादी मसीहा नहीं था, जिसकी यहूदियों को अपेक्षा थी, परन्तु पूर्ण संसार का उद्धारकर्ता (यूहन्ना 4:42; 1 तीमुथियुस 4:10)।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय दें। यीशु ने कोई भी आध्यात्मिक महत्व रखने के लिए दृष्टान्त की कहानी में प्रत्येक विवरण

देने का आशय नहीं किया था। दृष्टांत की कहानी में प्रासंगिक विवरण वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वाधीन आध्यात्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोज और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी के विवरणों में से कौन से वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक हैं ?

ध्यान दें।

स्वामी **।** वह स्पष्ट रूप से एक धनी किसान है, जो अपने खेत में काम करने के लिए कई नौकरों को काम पर लगाता है, अर्थात् बीज बोने और पौधों की देखभाल करने के लिए जब तक वे फसल के लिए तैयार नहीं हो जाते। प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से स्वामी ने फसल के समय अन्य फसल काटनेवाले विशेषज्ञ लगाए। स्पष्टीकरण हमें सीधा नहीं बताता है कि स्वामी किसको दर्शाता है। इसलिए यह इस दृष्टान्त में एक प्रासंगिक विवरण नहीं है। हालांकि, कहानी में, स्वामी अपने खेत में अच्छा बीज बोता है और फसल काटने के लिए अपने फसल काटनेवालों को भेजता है। और स्पष्टीकरण में, यीशु मसीह बोनेवाला और वह एक है, जो अपने स्वर्गदूतों को फसल काटने के लिए भेजता है। इस प्रकार, स्वामी एक ही समय में बोनेवाला है। खेत उसका राज्य है और वह वर्तमान समय में बुआई का निर्देशन करता है और साथ ही साथ अपने दूसरे आगमन पर फसल कटने का भी (सीएफ. मत्ती 16:18, "मैं अपनी कलीसिया का निर्माण करता हूँ!")।

बीज बोनेवाला। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:37)। अपने स्पष्टीकरण में, यीशु कहता है कि वह स्वयं बोनेवाला है।

शत्रु। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:39)। अपने स्पष्टीकरण में, यीशु कहता है कि शत्रु *शैतान* है। पहले से किए गए काम की परवाह किए बिना, यह शत्रु गेहूँ *के बीच* जँगली पौधे बोता है। यह उन लोगों के बीच विनाश का एक जानबूझकर किया कार्य है जो यीशु मसीह के कार्य में लगे हैं।

दृष्टांत शैतान को रात के समय अपने कार्य करने का वर्णन करता है जब "अन्य सब सो रहे होते हैं"। क्योंकि यीशु इस विस्तार की व्याख्या नहीं करते हैं, यह केवल कहानी का एक हिस्सा है, परन्तु मुख्य संदेश के लिए किसी विशिष्ट महत्व के साथ प्रासंगिक विवरण नहीं है। हालाँकि, यूहन्ना 3:19–21 में बताया गया है कि कैसे सभी लोग, जो मसीह (संसार की ज्योति) के बजाय अन्धकार से प्रेम करते हैं, ज्योति से घृणा करते हैं और इस डर से ज्योति में नहीं आएंगे कि उनके बुरे कर्म उजागर हो जाएँगे।

अच्छा बीज या गेहूँ। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:38)। स्पष्टीकरण में, अच्छा बीज "राज्य के पुत्रों" को दर्शाता है, अर्थात्, सभी वास्तविक मसीहियों का कुल योग। ये वे लोग हैं जिनमें सुसमाचार का बीज अच्छा फल लाता है (मत्ती 13:19,23) और जो यीशु मसीह को अपने जीवन के उद्धारकर्ता और राजा के रूप में मानते हैं। वे "धर्मी" हैं, जिन्हें विश्वास के द्वारा उचित ठहराया गया है (मत्ती 13:43)। मसीह के दूसरे आगमन के पश्चात, वे परमेश्वर के राज्य में सूरज के समान चमकेंगे।

जँगली पौधे। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:38)। स्पष्टीकरण में, अप्रिय जँगली पौधे "बुराई के पुत्रों" को दर्शाते हैं। वे "सभी बुरे और पाप का कारण बनने वाले काम करनेवाले" (मत्ती 13:41) हैं। जँगली पौधों में न केवल दुष्ट लोग, बल्कि दुष्ट आत्माएँ, बुरी योजनाएँ, गतिविधियाँ, कार्यक्रम और

बुरी परियोजनायें शामिल हैं, *जिन्हें वास्तविक मसीहियों के बीच बोया जाता है*। ठीक उसी प्रकार जैसे असली जँगली पौंधों में फफूंद होता है जो मनुष्य और जानवर के लिए जहरीला होता है, इसलिए ये लोग, आत्माएँ, कार्यक्रम और गतिविधियाँ वास्तविक मसीहियों को अति नुकसान और विनाश पहुँचाते हैं। उन्हें और उनकी ठोकरों को नरक में फेंक दिया जाएगा (मत्ती 13:42; सीएफ. मत्ती 25:41)।

स्वामी के नौकर। यीशु यह नहीं समझाता कि सेवक कौन हैं। फिर भी, दृष्टांत की कहानी में वे महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि स्वामी उन्हें कटाई के समय से पहले गेहूँ के बीच से जँगली पौधे उखेड़ने के लिए मना करता है। इसके बजाय, उन्हें कटनी के समय तक जँगली पौधों और गेहूँ को एक साथ बढ़ने देने की आज्ञा दी जाती है (मत्ती 13:28-30)। वे स्पष्ट रूप से पृथ्वी पर परमेश्वर के सेवकों को शामिल करते हैं। गेहूँ के बीच से जँगली पौधों को अलग करना परमेश्वर के सेवकों (जैसेः चेले, सुसमाचार प्रचारक, पासबान, उपदेशक, शिक्षक और अन्य मसीही) का काम नहीं है। उन्हें गेहूँ से जँगली पौधों को अलग करने की अनुमति नहीं है, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से कटनी के समय कटाई करनेवालों का काम है!

खेत। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:38)। स्पष्टीकरण में, खेत "संसार" को दर्शाता है। निम्नलिखित तीन तथ्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिएः

- **प्रथम। गेहूँ के बीच जँगली पौधों को बोया जाता है।**

यीशु यह नहीं कहता है कि गेहूँ *के साथ* या *किसी अन्य खेत में* जँगली पौधे बोए गए थे, परन्तु यह कि जँगली पौधे *उसी खेत में गेहूँ के बीच बोए गए थे!* इसलिए, यीशु संसार में गैर-मसीहियों के साथ मसीहियों के मिलन के विषय में नहीं सोच रहा है। परमेश्वर के राज्य के भीतर सच्चे और झूठे मसीहियों के मिलन के विषय में सोचना अधिक स्वाभाविक है, अर्थात्, संसार में कहीं भी पाई जाने वाली मसीही कलीसिया या मसीही संगठनों और संस्थानों के भीतर। इसमें मसीही कलीसिया परिषद्, मण्डलियों, संगठनों और संस्थानों में मसीही योजनाओं, गतिविधियों और कार्यक्रमों में मसीह की सच्चाई के साथ शैतान के झूठ का एक साथ मिलन शामिल है।

- **द्वितीय। परमेश्वर के राज्य के भीतर का यह मिलन एक रहस्य है।**

मत्ती 13:11 के अनुसार, गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत "एक भेद या परमेश्वर के राज्य का" भी है, एक रहस्य (एक वास्तविकता जिसे पहले समझाया नहीं गया है) जिसे यीशु अपने शिष्यों को प्रकट कर रहा है। संसार के भीतर ईश्वरविहीन और अधर्मी गैर-मसीहियों और ईश्वरीय और धर्मी मसीही लोगों के रूप में स्पष्ट रूप से अलग-अलग समूहों के लोगों के साथ मिलने को शायद ही "परमेश्वर के राज्य का रहस्य" कहा जा सकता है (सीएफ. 1 यूहन्ना 3:4-15)। परन्तु "परमेश्वर के राज्य का रहस्य या भेद" यह तथ्य है कि परमेश्वर उन लोगों को जो केवल नाममात्र मसीही (पारंपरिक मसीही या सांस्कृतिक मसीही) हैं, एक ही मसीही मण्डलियों, संगठनों और संस्थाओं के भीतर गंभीर मसीहियों के रूप में होने और काम करने की अनुमति देता है, हम मसीहियों को हमेशा एक स्पष्ट अंतर करने में सक्षम बनाए बिना! सच्चे मसीहियों को परमेश्वर की इस व्यवस्था का सम्मान करना चाहिए, निश्चित रूप से ईश्वरीय स्थापित अनुशासन की उचित सीमाओं का ध्यान रखते हुए। परमेश्वर की यह व्यवस्था अविश्वासियों (नाममात्र मसीहियों और गैर-मसीहियों) को परमेश्वर के राज्य के भीतर मसीही संदेश सुनने और मसीही जीवन का अवलोकन करने का सबसे अच्छा अवसर देती है।

- **तृतीय। केवल अंतिम न्याय पर जँगली पौधों को गेहूँ से अलग किया जाता है।**

केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर नाममात्र मसीही (जँगली पौधे) सच्चे मसीहियों (गेहूँ) से अलग किए जाते हैं। केवल तभी यीशु मसीह बिना किसी गलती के विश्वासियों से अविश्वासियों को अलग करने के लिए अपने स्वर्गदूतों (फसल काटनेवाले) को भेजेगा (सीएफ. मत्ती 24:30-31; 25:31-33)। दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह *अपने राज्य में से* वह प्रत्येक चीज (जँगली पौधे) इकट्ठा करेगा जो लोगों को पाप की ओर आकर्षित करते हैं (ठोकरें देनेवाले) और उन सभी लोगों को जो अराजकता करते हैं। एक विशेष अर्थ में उन्हें "उसके राज्य में से" इकट्ठा नहीं किया जा सकता है, यदि वे पहले "उसके राज्य के भीतर" नहीं थे! हालाँकि पूर्ण संसार सभी चीजों और सभी लोगों के साथ जो उस में हैं मसीह के राज्य का एक हिस्सा है, जिस पर वह एक पूर्ण संप्रभु तरीके से शासन करता है (सीएफ. मत्ती 28:18), अविश्वासियों (चाहे नाममात्र मसीही या गैर-मसीही) और कलीसिया के बाहर सभी दुष्ट लोगों के हृदय और जीवन को यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन नहीं देखा जाता है। सुसमाचार प्रचार और यीशु मसीह में उनके विश्वास के द्वारा उन्हें मसीह के राज्य में लाया जाता है (सीएफ. कुलुस्सियों 13:13)।

यद्यपि यह लग सकता है कि मसीही कलीसियाओं और संगठनों के भीतर नाममात्र मसीही मसीह के राज्य का हिस्सा हैं, केवल यीशु मसीह देख सकता है कि उनके हृदय और जीवन उसके संप्रभु शासन के अधीन हैं या नहीं (सीएफ. मत्ती 22:10-11,14; यूहन्ना 2:24-25)। इस प्रकार, "गेहूँ के बीच जँगली पौधों" का मिलन मसीही कलीसिया के भीतर (और न केवल संसार के भीतर) वास्तविक विश्वासियों में अविश्वासियों या दिखावटी विश्वासियों के मिलन को दर्शाता है। परमेश्वर के राज्य का वर्तमान रूप नाममात्र मसीहियों का सच्चा मसीहियों के साथ मिलन है।

फसल और फसल काटनेवाले। "फसल" और "फसल काटनेवाले" दोनों प्रासंगिक विवरण हैं (मत्ती 13:39)। स्पष्टीकरण में, फसल अंतिम समय में अंतिम न्याय को दर्शाती है और फसल काटनेवाले स्वर्गदूतों को दर्शाते हैं। कटाई का कार्य केवल यीशु मसीह का है (मत्ती 31:2; प्रकाशितवाक्य 14:14-16)। वह स्वयं अंतिम न्याय का निर्देशन करेगा। परन्तु वह अपने स्वर्गदूतों को यह जिम्मेदारी सौंपेगा (मत्ती 13:41; 24:30-31; 25:31-32)।

यह ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि जबकि "नौकर" (परमेश्वर के राज्य में सेवक) कटनी के समय से *पहले* "जँगली पौधों" और "गेहूँ" के बीच *अंतर नहीं कर सकते,* "फसल काटनेवाले" (स्वर्गदूत) कर सकते हैं! यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जँगली पौधों और गेहूँ के बीच का अंतर केवल फसल कटनी के समय स्पष्ट होगा, जब जँगली पौधों को गेहूँ से अलग किया जाएगा! केवल फसल कटनी के समय ही मसीह "भेड़ों" से "बकरियों" को अलग कर देगा। केवल मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय में हर कोई यह जानने में सक्षम होगा कि कौन वास्तविक मसीही हैं और कौन नहीं (मत्ती 25:32)! दूसरे आगमन से पहले, मसीही पहले से ही जान सकते हैं कि मण्डलियों के बाहर और संसार के भीतर वास्तविक मसीही कौन हैं और कौन नहीं हैं(1 यूहन्ना 3:4-15), क्योंकि केवल नया जन्म पाए मसीही अपने मुंह से अंगीकार करते हैं (रोमियों 10:9-10) और अपने जीवन से फल लाते हैं (मत्ती 7:16-20)। परन्तु *राज्य के भीतर,* अर्थात्, दिखाई देने वाली मसीही मण्डलियों, संगठनों और संस्थानों के भीतर, यह अंतर निश्चित रूप से स्पष्ट नहीं है (सीएफ. मत्ती 8:11-12; रोमियों 9:6)!

जँगली पौधों को जलाने के लिए पूलों में बाँधा जाता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:42)।

अपने स्पष्टीकरण में, यीशु कहता है कि उन्हें आग की भट्टी में फेंक दिया जाएगा (नरक, सीएफ. प्रकाशितवाक्य 21:8), जहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा। नरक में "रोना" बाइबल में अन्य सभी वर्णित रोने से अलग है। यह एसाव का रोना नहीं है, जब उसने अपनी विरासत खो दी थी (उत्पत्ति 27:38)। यह वह शोक का रोना नहीं है, जब मूसा की मृत्यु हो गई (व्यवस्थाविवरण 34:8)। यह अहाब का रोना नहीं है जब उसे अपना चाहा हुआ नहीं मिला (1 राजा 21:1-6)। यह रोना गमगीन होगाय कभी न समाप्त होने वाली विकटता और अनंतकाल की निराशा। "दाँतों का पीसना" कष्टदायी पीड़ा और उन्मत्त क्रोध को दर्शाता है।

गेहूँ को स्वामी के खलिहान में इकट्ठा किया जाता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:43)। मसीह के पहले आगमन के पश्चात से, नया-जन्म पाए विश्वासियों को वर्तमान रूप राज्य में इकट्ठा किया जा रहा है (मत्ती 3:11-12)। मसीह के दूसरे आगमन पर वे अपने अंतिम और पूर्ण रूप में राज्य में एकत्रित होंगे (मत्ती 25:34)। वहाँ वे "सूर्य के समान चमकेंगे" (दानिय्येल 12:3), अर्थात्, परमेश्वर की महिमा उनमें परिलक्षित होगी (1 यूहन्ना 3:2; 2 कुरिन्थियों 3:18)!

परमेश्वर का राज्य। यह इस दृष्टान्त में सबसे अधिक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:43)। इस दृष्टांत में अन्य सभी विवरण मसीह के दूसरे आगमन से पहले संसार में परमेश्वर के राज्य का उसके वर्तमान स्वरूप में वर्णन करते हैं।

इस दृष्टांत में, यीशु ने खुलासा किया कि पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के वर्तमान स्वरूप में दो प्रकार के लोग हैंः दुष्ट लोग (अविश्वासी, नाममात्र मसीही, पारंपरिक मसीही, संस्कृति मसीही) और धर्मी लोग (नया-जन्म पाए मसीही), बिना किसी के पास उनके बीच स्पष्ट रूप से अंतर करने में क्षमता के साथ। इस दृष्टांत में, "अच्छा बीज" परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को नहीं दर्शाता है (मत्ती 24:14) और "जँगली पौधे" शैतान और उसके सेवकों द्वारा फैलाए गए झूठे सुसमाचार को नहीं दर्शाते हैं (2 कुरिन्थियों 11:1-4)। "अच्छे बीज" और "जँगली पौधे" संदेशों को नहीं परन्तु लोगों को दर्शाते हैं! "खेत" सामान्य रूप से संसार को नहीं दर्शाता, जहाँ इन दोनों संदेशों की घोषणा की जाती है, परन्तु संसार में उस विशिष्ट क्षेत्र को जहाँ लोगों के ये दोनों समूह मिले हुए हैं, बिना कोई स्पष्ट रूप से उनके बीच भेद करने में क्षमता के साथ! "जँगली पौधे" उन लोगों को दर्शाते हैं, जो नया-जन्म पाए मसीहियों के बीच इस प्रकार से बोए जाते हैं, कि नया-जन्म पाए मसीही अपने और दूसरे नाममात्र मसीहियों के बीच स्पष्ट अंतर करने में सक्षम नहीं हैं!

यही कारण है कि "खेत" केवल "पृथ्वी" के अर्थ में "संसार" को नहीं दर्शाता है, वह स्थान जहाँ गैर-मसीही और मसीही एक साथ रहते हैं और वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि वे गैर-मसीही हैं या मसीही हैं। "खेत" अपने वर्तमान चरण में परमेश्वर के राज्य को दर्शाता है जिसमें नाममात्र मसीही (पारंपरिक मसीही, संस्कृति मसीही) और वास्तविक (नया-जन्म पाए) मसीही इस प्रकार से आपस में मिल जाते हैं जिसमें उनके बीच अंतर करना कठिन हो जाता है। गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत मसीह के दूसरे आगमन से पहले अपने वर्तमान चरण में परमेश्वर के राज्य का प्रतीक है और मसीह के दूसरे आगमन (फसल) पर अंतिम न्याय के पश्चात अपने अंतिम और सिद्ध चरण में परमेश्वर के राज्य का प्रतीक नहीं है।

शब्द "कलीसिया" (यूनानीः एक्क्लेसिआ) और "परमेश्वर का राज्य" (यूनानीः बेसिलेआ तू थेऊ) संभवतया कभी सटीक समकक्ष नहीं हैं। "कलीसिया" में ऐसे लोग शामिल हैं, जो यीशु मसीह पर अपने विश्वास का दावा करते हैं, भले ही उनका अंगीकार वास्तविक हो या न हो (लोग एक-दूसरे के

हृदयों में यह देखने के लिए दृष्टि नहीं डाल सकते कि क्या वे नया–जन्म पाए हुए हैं)। परन्तु "परमेश्वर के राज्य" के अपने वर्तमान चरण में दोनों, लोग *और* क्षेत्र शामिल हैं, जैसे संस्थाएँ, संस्थान, संस्कृति आदि, जिसमें मसीह के शासन को खुले तौर पर मान्यता प्राप्त है (मसीहियों द्वारा) और मान्यता प्राप्त नहीं है (गैर–मसीहियों द्वारा)। गैर–मसीही भले ही यीशु मसीह और उसके शासन ध्राज्य को मान्यता नहीं देते हैं, वे फिर भी उसके शासन के अधीन हैं। केवल "गेहूँ के बीच जँगली पौधों" और "बड़े जाल" के दृष्टान्त में "कलीसिया" और "परमेश्वर के राज्य" शब्दों का अर्थ बहुत करीब है। दोनों दृष्टांतों में सच्चे (नया–जन्म पाए) मसीहियों और नाममात्र मसीहियों (पारंपरिक मसीही, संस्कृति मसीही) के बीच अंतर यीशु के दूसरे आगमन (फसल) पर अंतिम न्याय में ही स्पष्ट होता है।

एक दृष्टांत या एक रूपक? क्योंकि इस दृष्टांत में बहुत सारे विवरण कुछ आवश्यक या प्रासंगिक को दर्शाते हैं, यह दृष्टान्त एक रूपक के करीब भी आ जाता है। फिर भी, मत्ती 13:24,36 इसे "दृ ष्टान्त" कहते हैं। इसके अलावा इस दृष्टांत में केवल एक मुख्य संदेश या एक केंद्रीय बिंदु है, अर्थात्, फसल कटनी से पहले वास्तविक मसीहियों (गेहूँ, भेड़) के साथ नाममात्र मसीहियों (जँगली पौधे, बकरियों) के अंतर्मिश्रण के संबंध में धैर्य रखने के लिए यीशु मसीह की अपने सेवकों को आज्ञा, जब तक कि मसीह और उसके स्वर्गदूत उन्हें अंतिम न्याय में अलग नहीं कर देंगे।

दृष्टांतों की व्याख्या करने के लिए एक महत्वपूर्ण नियम। दृष्टांत रूपक नहीं होते हैं और दृष्टांत को रूपक नहीं बनाया जाना चाहिए! अतीत में कुछ मसीहियों ने दृष्टांतों को रूपक बना दिया था। उदाहरण के लिएः

कलीसिया फादर ऑगस्टीन (ई.स. 354–430) ने अच्छे सामरी के दृष्टांत को इस प्रकार से रूपक बनाया। "पुरुष, जो यरूशलेम से यरीहो चला गया था", ने आदम को दर्शाया। "लुटेरों" ने शैतान और उसके दूतों को दर्शाया। "याजक और लेवी" ने व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को दर्शाया। "अच्छे सामरी" ने मसीह को दर्शाया। "सराय" ने कलीसिया को दर्शाया। और "दो चांदी के सिक्कों" ने वर्तमान और भविष्य में जीवन के वादे को दर्शाया! अ०गस्टीन ने अच्छे सामरी के दृष्टांत की व्याख्या दृष्टान्त के रूप में नहीं, बल्कि रूपक के रूप में की है! उसकी व्याख्या गलत है!

कलीसिया के फादर क्राइसोस्ट०म (ई.स. 347–407) ने गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत को इस प्रकार से रूपक बनाया। "जँगली पौधे" विधर्मियों के समाजों को दर्शाते हैं। शैतान की चालाकी सच्चाई और त्रुटि को मिश्रित करने के प्रयास द्वारा वर्गीकृत की जाती है ताकि वह धोखा दे सके और बहका सके। क्राइसोस्ट०म ने इस दृष्टांत को यह कहते हुए सही ढंग से लागू किया, "मसीहियों को विधर्मियों को मारने से मना किया जाता है"। विधर्मियों (विभाजनकारी लोगों) को दो बार चेतावनी दी जानी चाहिए (तीतुस 3:9–10), फिर कलीसिया से निष्कासित कर दिया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:12–13) और मसीही घरों में कभी भी ग्रहण या स्वागत नहीं किया जाना चाहिए (2 यूहन्ना 10)।

दृष्टान्तों की व्याख्या करने का नियम। यह तथ्य कि यीशु मसीह द्वारा गेहूँ के बीच जँगली पौधों के अपने दृष्टांतों के कई विवरणों को अलग–अलग प्रतीकात्मक अर्थ देना, मसीहियों को अन्य दृष्टांतों की कहानियों के प्रत्येक विवरण के लिए अलग प्रतीकात्मक अर्थ देना, महत्व का वर्णन करने का अधिकार नहीं देता है! दृष्टांत वास्तव में केवल एक मुख्य संदेश देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय दें। दृष्टांत का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या स्वयं कहानी से ही मिला है। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आध्यात्मिक सच्चाई खोजने का प्रयास नहीं करना चाहिए, परन्तु उस एक मुख्य पाठ की खोज करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:14-43 में गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों" के विषय में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के सेवकों को परमेश्वर के राज्य के अपने वर्तमान धैर्य का प्रयोग करना चाहिए।" गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत इस बात पर जोर देता है कि मसीहियों के पास "अच्छे" (गंभीर, नया-जन्म पाए) मसीहियों को "बुरे" (पाखंडी, नया-जन्म न पाए) मसीहियों से अलग करने का काम नहीं है। मसीहियों और मसीही अगुवों को उन्हें न्याय के दिन तक एक साथ बढ़ने, रहने और कार्य करने देना चाहिए। तब यीशु मसीह अपने स्वर्गदूतों के साथ उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा।

नाममात्र मसीहियों के संबंध में धैर्य परमेश्वर के राज्य में मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य में सेवकों को अपनी संगती या मण्डली से निम्नलिखित लोगों को बाहर निकालने के लिए उत्सुक नहीं होना चाहिए। उन्हें ऐसे लोगों को निष्कासित नहीं करना चाहिए जो मसीह के नियमित अनुयायियों के नहीं हैं। उन्हें ऐसे लोगों को निष्कासित नहीं करना चाहिए जो अभी तक परिवर्तित नहीं हुए हैं। और उन्हें ऐसे लोगों को निष्कासित नहीं करना चाहिए जिनके पास अभी भी कुछ अजीब अपरिपक्व कायलताएँ और व्यवहार प्रतिमान हैं।

परमेश्वर के राज्य के सेवकों को कलीसिया के अनुशासन और अपने बीच में "असिद्ध" लोगों के प्रति प्रेम और दया दिखाने की आवश्यकता के बीच अंतर करना चाहिए। उन्हें *कलीसिया के अनुशासन का पालन करना चाहिए,* अर्थात, उन्हें चेतावनी देने, डाँटने, सही करने के लिए बाइबल के दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो सदस्यों को मण्डली से बाहर रहने का प्रतिबंध लगाना चाहिए, यदि वे अपने ज्ञात गन्दे पापों के लिए पश्चाताप नहीं करते हैं।

परन्तु परमेश्वर के राज्य के सेवकों को कलीसिया की सभाओं में शामिल नाममात्र मसीहियों (पारंपरिक मसीही, सांस्कृतिक मसीही) के संबंध में *धैर्य का प्रयोग करना चाहिए।* उन्हें यह निर्धारित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि मण्डली के भीतर कौन "अच्छा बीज" है और कौन "एक जँगली पौधा" है। इसके बजाय, उन्हें यीशु मसीह में व्यक्तिगत विश्वास बनाने हेतु लोगों को जीतने का प्रयास करना चाहिए। मसीही सेवक अन्य मसीहियों के जीवन में ज्ञात पाप के आधार पर कार्य कर सकते हैं। परन्तु वे ऐसा कार्य नहीं कर *सकते जैसे कि वे परमेश्वर हों और जानते हों* कि वास्तव में नया जन्म पाया हुआ कौन है और कौन नहीं। यह विशेषाधिकार केवल यीशु मसीह का है (यूहन्ना 3:38; मत्ती 25:31-46)।

---

5. <u>बाइबल में समानांतर और विपरीत वचनों के साथ दृष्टांत की तुलना करें</u>।

परिचय दें। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य वचनों में सिखाए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रति–सन्दर्भों को खोजने का प्रयास करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में सहायता करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोज और चर्चा करें। जो बाइबल के वचन सिखाते हैं, उसकी तुलना उससे कैसे होती है जो गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत की तुलना बीज बोनेवाले के दृष्टांत के साथ।

पढ़िए मत्ती 13:36 और लूका 8:9। वचन के इन दो भागों की तुलना करके, यह असंभाव्य है कि इन दो दृष्टांतों को इस कालानुक्रमिक अनुक्रम में बताया गया है और यह कि मत्ती 13:3–9 में बताए दृष्टांत के तुरन्त बाद मत्ती 13:24–30 में बताया दृष्टांत आता है। यीशु के इन दृष्टांतों को लोगों की भीड़ को सुनाने के पश्चात, वह एक घर में गया और वहाँ उसके शिष्यों ने उसे इन दृष्टांतों को समझाने के लिए कहा।

बीज बोनेवाले दृष्टांत और गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत के बीच समानताएँ और कुछ अंतर हैं। समानता के अनुसार, दोनों दृष्टांत एक बीज बोनेवाले, एक खेत, बीज और एक फसल के विषय में बोलते हैं। अंतर के रूप में, पहली दृष्टांत में, शैतान अच्छे बीज को छीन लेता है और दूसरे दृष्टांत में, वह गेहूँ के बीच जँगली पौधे बोता है। शैतान कभी–कभी परमेश्वर के वचन का खुलकर विरोध करता है और उसे लोगों से छीन लेता है। परन्तु अन्य समयों में वह परमेश्वर के सच्चे लोगों के मन में विष घोलने के लिए घुसपैठ करता है। पहले दृष्टांत में, सम्पूर्ण बीज अच्छा है, परन्तु दूसरे दृष्टांत में, गेहूँ के बीच जँगली पौधे दिखाई देते हैं। पहले दृष्टांत में, विभिन्न परिस्थितियों और हृदय के रवैयों द्वारा परमेश्वर के वचन के ग्रहण करने पर जोर दिया गया है। दूसरे दृष्टांत में, कलीसिया में वास्तविक मसीहियों और नाममात्र मसीहियों के बीच अंतर करने और उन्हें अलग करने के संबंध में धैर्य रखने पर जोर दिया गया है।

(2) दृष्टांत 1 यूहन्ना 3:4–15 के विपरीत है।

पढ़िए 1 यूहन्ना 3:4–15। 1 यूहन्ना जोर देता है <u>उन लोगों के दो समूहों पर जो सामान्य रूप से संसार में रहते हैं</u>: "परमेश्वर से पैदा हुए बच्चे जो वह करते हैं जो धार्मिकता का कार्य होता है" और "शैतान के बच्चे जो वह करते हैं जो धार्मिकता का कार्य नहीं होता है"। परन्तु गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत जोर देता है <u>दो लोगों के समूह पर जो परमेश्वर के राज्य के भीतर उसके वर्तमान रूप में रहते हैं</u> (कलीसिया में)। 1 यूहन्ना में संसार में लोगों की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से विख्यात किया जा सकता है, परन्तु मत्ती 13:24–30 में परमेश्वर के राज्य में (कलीसिया में) लोगों की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से विख्यात नहीं किया जा सकता है। मसीहियों के लिए यह संभव नहीं है कि वे सच्चे नया–जन्म पाए मसीहियों और ऐसे मसीहियों के बीच भेद कर सकें जो स्वयं नाम में, परंपरा में और संस्कृति में मसीहियों के रूप में व्यवहार करते हैं। इसलिए गेहूँ के बीच से जँगली पौधे उखाड़ना नौकरों का काम नहीं है। बाइबल में वचन के ये दो भाग परमेश्वर के राज्य के दो अलग–अलग पहलुओं पर जोर देते हैं। 1 यूहन्ना इस बात पर जोर देता है कि संसार में गैर–मसीही लोगों को कलीसिया में नया–जन्म पाए मसीहियों से स्पष्ट रूप से अलग किया जा सकता है, क्योंकि गैर–मसीही लोग पाप में निरन्तर रहते हुए दिखते हैं। परन्तु मत्ती 13:24–30 इस बात पर जोर देता है कि नाममात्र मसीहियों को कलीसिया के भीतर वास्तविक मसीहियों से स्पष्ट रूप से अलग नहीं

किया जा सकता है!

(3) दृष्टांत, बड़े जाल के दृष्टांत के विपरीत है।

पढ़िए मत्ती 13:47-50। "बड़े जाल का दृष्टांत" संसार में परमेश्वर के राज्य को अपने वर्तमान रूप में सभी प्रकार के लोगों को इकट्ठा करने की बात करता है और यह कि वास्तविक मसीही केवल मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय में अन्य सभी लोगों से अलग किए जाएँगे। यह जाल के अंदर की अच्छी मछलियों को अभी भी समुद्र के भीतर खराब मछलियों के विपरीत नहीं करता है, परन्तु इस तथ्य पर जोर देता है कि जाल के भीतर अच्छी मछलियाँ खराब मछलियों के साथ तब तक मिली रहती हैं जब तक कि पकड़े जाने के पश्चात उन्हें अलग-अलग नहीं करते हैं। इस प्रकार बड़े जाल के दृष्टांत में समान केंद्रीय संदेश है जो गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टान्त में हैं। दोनों दृष्टांत यह सिखाते हैं कि मसीही और नाममात्र मसीही धरती पर परमेश्वर के राज्य के अपने वर्तमान रूप में और कलीसिया और मसीही संगठनों और संस्थानों में मिश्रित रहेंगे, जिस दिन तक उन्हें छाँटा नहीं जाएगा और अंतिम न्याय के दिन एक दूसरे से अलग-अलग नहीं किया जाएगा।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या होना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) मुख्य संदेश।

मत्ती 13:14-43 में गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत *"परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों"* के विषय में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के सेवकों (कलीसियाओं के पदवी पाए व्यक्ति या अगुवे) को परमेश्वर के राज्य के अपने वर्तमान सांसारिक प्रकटीकरण (रूप) में वास्तविक मसीहियों और नाममात्र मसीहियों के बीच अंतर्मिश्रण के संबंध में धैर्य का प्रयोग करना चाहिए।" परमेश्वर के सेवकों को परमेश्वर के राज्य में (कलीसिया में) सभी लोगों को परमेश्वर के वचन को सुनने और अंतिम न्याय के दिन तक एक साथ बढ़ने के लिए अनुमति देनी चाहिए, जब यीशु मसीह अपने स्वर्गदूतों के साथ मिलकर उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा और परमेश्वर के राज्य का उसके अंतिम प्रकटीकरण में नई पृथ्वी के रूप में उद्घाटन करेगा।

(2) धैर्य के संबंध में पाठ।

शिष्य कभी-कभी अपनी संगती से कुछ लोगों को निष्कासित करने के लिए उत्सुक थे, जो मसीह के विश्वासयोग्य (नियमित, आधिकारिक) अनुयायियों के नहीं थे (लूका 9:49-50)। वे कभी-कभी शिष्यों के अपने ही समूह के सदस्यों के विरुद्ध क्रोध में भड़कने के लिए अति तैयार थे (लूका 22:24)।

यीशु मसीह सिखाता है कि मसीही अपनी मसीही सभाओं, संगठनों और संस्थानों में से भाग लेने वालों को दूर न करें जब तक कि कोई गंभीर शिक्षा या व्यवहार संबंधी समस्या शामिल न हो। मसीहियों को मसीही कलीसिया (मसीह की देह) के भीतर मसीहियों की महान विविधता को सहन करना चाहिए और "सभी के साथ धैर्य रखना चाहिए" (1 थिस्सलुनीकियों 5:14)।

यह निर्धारित करने का अधिकार है कि "अच्छा बीज" कौन है और "जँगली पौधा" कौन है, इसे यीशु

मसीह, न्यायाधीश पर छोड़ देना चाहिए। ऐसा कहने में, मसीह कलीसिया के अनुशासन को तोड़ता नहीं है (मत्ती 18:15-18), परन्तु मसीहियों में बुद्धिमान धैर्य की भावना उत्पन्न की है। जब मसीही धैर्य से प्रेम रखने का अभ्यास करते हैं, तो कलीसिया का अनुशासन ही मजबूत हो जाएगा, क्योंकि अनुशासन का मुख्य उद्देश्य मानवीय भावना को नष्ट करना नहीं है, परन्तु उसे बचाना है (1 कुरिन्थियों 5:5)।

(3) सुनने का परमार्श।

यीशु ने प्रकाशितवाक्य की किताब 2 और 3 में मण्डलियों को दिए गए अपने सभी सात पत्रों के अंत में परमार्श को दोहराया "जिस के कान हों, वह सुन ले" (मत्ती 13:43)। यह एक बहुत महत्वपूर्ण परमार्श है। यदि किसी व्यक्ति के पास सुनने के लिए कान हैं, परन्तु परमेश्वर (मसीह) के वचनों को नहीं सुनने के लिए अपने कान बंद कर देता है, तो वह अक्षम्य पाप करता है (इब्रानियों 6:4-8; 10:26-31)। जब वह परमेश्वर के वचनों को प्राप्त नहीं करता है और उसके वचनों को अनदेखा करना जारी रखता है, तो वह *अक्षम्य पाप करता है* (इब्रानियों 4:7; 6:4-8; 10:26-31)। "सभी गलत काम करना पाप है। एक पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है" (1 यूहन्ना 5:16-17)। अक्षम्य पाप तब होता है जब कोई व्यक्ति परमेश्वर से पैदा नहीं हुआ होता और *जानबूझकर पाप करता रहता है* (1 यूहन्ना 3:6-9) (क्रिया *निरंतर वर्तमान काल* में हैं और इसलिए इसका अर्थ यह नहीं है: "वह जो पाप करता है" (सीएफ. 1 यूहन्ना 1:8-10), परन्तु: "वह जो पाप *करता रहता* है" (1 यूहन्ना 3:6-9)। यीशु मसीह अपने सुननेवालों को उसके वचनों को अच्छी रीति से सुनने, उस में विश्वास करने और यह देखने के लिए स्वयं को जाँचने हेतु कहता है कि वह "अच्छा बीज" है (राज्य का बच्चा) या "एक जँगली पौधा" (शैतान का बच्चा) है (मत्ती 13:38)। "अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को जाँचो, क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि यीशु मसीह तुम में है-नहीं तो, निश्चित रूप से, तुम इस परीक्षा में विफल रहे हो (2 कुरिन्थियों 13:5)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)***
	अगले अध्याय के लिए	

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **न्यायियों 13, 14, 15 और 16** के आधे अध्याय

से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।

पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. याद करना। (2) **रोमियों 1:17।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 2:17-29।**

   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।